Goonjnayi@gmail.com

दिसम्बर अंक 2022

# शोध साहित्य एवं संस्कृति की उत्कृष्ट मासिक पत्रिका

# नई गूँज

Www.nayigoonj.com

NAYI GOONJ – SHODH , SAHITYA EVAM SANSKRITI (MONTHLY) MAGAZINE

शोध , साहित्य और संस्कृति की मासिक वैब पत्रिका

# नयी गूंज-------.

वर्ष 2022

अंक 12

संपादक मंडल

WEBSITE- nayigoonj.com
Email address goonjnayi@gmail.com -
WHATSAPP NO. 91-9785837924



दिसम्बर 2022

प्रमुख संरक्षक

प्रो. देव माथुर

vishvavishvaaynamah.webs1008@gmail.com

मुख्य संपादक

रीमा माहेश्वरी

shuddhi108.webs@gmail.com

संपादक

शिवा 'स्वयं'

sarvavidhyamagazines@gmail.com

शाखा प्रमुख

ब्रजेश कुमार

aryabrijeshsahu24@gmail.com

परामर्शदाता

कमल जयंथ

jayanth1kamalnaath@gmail.com

## सम्पादकीय

# हम न समझें थे बात इतनी सी

शिवा स्वयं

कहते है वक्त पर की जाये तो कदर कहलाती है और वही बात वक़्त निकल जाने के बाद पछतावा कहलाती है !,

ज़ब हम ऐसी स्थिति क़ो अपने सामने जीते हैं ना तो पता चल जाता है कि वक़्त की कीमत कितनी बड़ी होती है !

वक़्त पर किया गया इलाज, और वक़्त पर कहे गए कुछ शब्द प्राणों क़ो भी बचा लेते हैं !

सोचिये कि डॉक्टर जो जीवन रक्षक होते हैं अगर समय बीत जाने पर इलाज करें तो क्या होगा...... उनके इलाज का कोई अर्थ ही नहीं रह जायेगा.

सूरज उगने का समय ना देखें तो सुबह कैसे होगी ? कैसे दिन शुरू होगा?

चाँद समय पर ना दिखे तो रात कैसे होगी..... जीवन रुक ही जायेगा !'

आपके गुरु इस वर्ष की परीक्षा में आने वाली बातों क़ो समय निकल जाने के बाद पढ़ाये.......

समय बड़ा बलवान है, कई महापुरुषों ने अलग अलग तरह इसकी महत्वता क़ो लिखा है -

स्पष्ट है कि हमें वक़्त का महत्व वक़्त खुद ही बता देता है ! इसलिये वक़्त क़ो कभी छोटी शक्ति नहीं मानना चाहिए ! ये हमारे हाथों में तब तक ही होता है ज़ब तक हम इसकी कदर करें और अगर हम उसकी कदर नहीं करते तो हमारे हाथ में फिर कुछ नहीं रह जाता !

कहते हैं ना जितनी भी इच्छा, प्रयास कर लो, दुनिया में ऐसा कोई नहीं जो ऐसी घड़ी का अविष्कार कर दिखाया हो जो बीते हुए पलों क़ो एक बार फिर से सामबे ले आये !

वक़्त यानि समय केवल आगे की ओर चलना जानता है पीछे कि ओर देखने के लिए एक क्षण का भी नहीं लगाता !

सूर्य और चन्द्रमा ने भी वक़्त के साथ कभी समझौता नहीं किया ! ईश्वर ने साक्षात् उदाहरण देकर हमें समझाया है सूर्य और चन्द्रमा के माध्यम से कि रुको नहीं चलो !

निरंतर चलो..... ये वक़्त है उदय का तो उगो अभी अस्त होने का समय नहीं आया ! ज़ब वो आएगा तो तुम अपनी सारी दौलत देकर वक़्त की एक बूंद क़ो बाजार से नहीं ला पाओगे ! सार ये है कि बताइये क्या अनमोल है, समय, वक़्त, घड़ी, पल, लम्हा लम्हा जो ईश्वर ने दिया उससे अधिक कीमती कुछ नहीं ! बाकि हर चीज बिकती है आप अपनी हैसियत से जितना खरीदना चाहो ला सकते हो !

कीमत समझो भूखे व्यक्ति की भूख के समय उसे दी गई उस रोटी की, जिसे खा कर वो केवल तृप्त नहीं हुआ, बल्कि वो जी गया !

कीमत समझो उस समय पिलाये गए जल की जिसे न मिलने से शायद प्यास ही न बच पाती !

**कीमत समझो उस आवाज़ की, जिसे वक़्त पर न सुना जाये तो फिर कितना भी सुनने का समय तुम्हारे पास हो, फिर वो आवाज़....**

**सब कुछ तुम्हारी शक्ति या तुम्हारे धन, और पद से नहीं हो रहा यहाँ, वो हो रहा है जो वक़्त चाहता है**

## शुभेच्छा

# नयी गूंज------. परिवार

## परामर्शदाता-

*प्रश्न है कि संस्कृति क्या है। यूं संस्कृति शब्द सम्+कृति से बना है, जिसका अर्थ है अच्छी कृति। अर्थात् संस्कृति वस्तुतः राष्ट्रीय अस्मिता के परिचायक उदात्त तत्वों का नाम है।*

*भारतीय सन्दर्भ में संस्कृति व्यक्तिनिष्ठ न होकर समष्टिनिष्ठ होती है। संस्कृति की संरचना एक दिन में न होकर शताब्दियों की साधना का सुपरिणाम होता है। अतः संस्कृति सामासिक-सामाजिक निधि होती है। संस्कृति वैचारिक, मानसिक व भावनात्मक उपलब्धियों का समुच्चय होती है। इसमें धर्म, दर्शन, कला, संगीत आदि का समावेश होता है। इसी की अपरिहार्यता की ओर संकेत करते हुए भर्तृहरि ने लिखा है कि इसके बिना मनुष्य घास न खाने वाला पशु ही होता है-*

*"साहित्यसंगीतकला-विहीनः*

*साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः।।*

## मुख्य संपादक

*उपनिषद् के शब्दों में कहें तो संस्कृति में जीवन के दो आयाम श्रेय व प्रेय का सामंजस्य होता है। इन्हीं आधार पर आध्यात्मिक, वैचारिक व मानसिक विकास होता है और इन्हीं के आधार पर जीवन-मूल्यों व संस्कारों का निर्धारण होता है और यही जीवन के समग्र उत्थान के सूचक होते हैं। शिक्षा-तंत्र में इन्हीं सांस्कृतिक मूल्यों का शिक्षण-प्रशिक्षण होता है। वर्तमान में शिक्षा-व्यवस्था संस्कृति की अपेक्षा सभ्यता-निष्ठ अधिक है। तात्पर्य है कि वर्तमान शिक्षा विचार-प्रधान, चिन्तन-प्रधान व मूल्यप्रधान की अपेक्षा ज्ञानार्जन-प्रधान है। वस्तुतः इसी का परिणाम है कि सम्प्रति शिक्षा के द्वारा बौद्धिक स्तर में तो अभिवृद्धि हुई है किन्तु संवेदनात्मक या भावनात्मक स्तर घटा है।*

## संपादक -

*हमारी शिक्षा में सांस्कृतिक मूल्यों के स्थान पर पश्चिमी सभ्यता-मूलक तत्वों को उपादान के रूप में ग्रहण कर लिया गया है। तभी तो शिक्षा व समृद्धि के पाश्चात्य मानदण्डों को आधार मान लिया है जो संस्कृति- विरोधी हैं, जिनमें नैतिक व मानवीय मूल्यों का विशेष स्थान नहीं है। इसी का परिणाम है कि बुद्धिमान व गरीब नैतिक व्यक्ति सामाजिक दृष्टि से भी हांसिये पर ही रहता है और नैतिकता- विहीन, संवेदनहीन, भ्रष्टाचारी व अपराधी भी सम्पन्न, सभ्य, सम्मान्य व प्रतिष्ठित होता है। इसी संस्कृति- विहीन व्यवस्था के कारण शोषण-प्रधान पूंजीवादी व्यवस्था ही ग्राहय हो गई है, जिसने रहन-सहन के स्तर को तो उठाया है, पर इस भोगवादी बाजारवादी व्यवस्था के कारण अर्थशास्त्र व तकनीकिविज्ञान के सामने नैतिकता व मानवीयता गौण हो गई है। जबकि राधाकृष्णन व कोठारी आयोग की मान्यता थी कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जो सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक परिवर्तन का प्रभावी माध्यम बन सके। इस दृष्टि से भारतीय प्रकृति और संस्कृति के अनुरूप शिक्षा से ही मूल्यपरक उदात्त-गुणों का संप्रेषण और समग्र व्यक्तित्व का निर्माण सम्भव है। इसमें पुराने व नये का बिना विचार किये जो देश की अस्मिता व समाज के हितकर है, उसी को प्रमुखता देनी चाहिए।*

## शाखा प्रमुख की कलम से--

*प्रिय पाठकों*

*संस्थान की पत्रिका नयी गूंज के पहले अंक का लोकार्पण एक आंतरिक सुख की अनुभूति करा रहा है।*

*मुझे प्रसन्नता है कि* शाखा प्रमुख *के रूप में कार्यभार संभालने के बाद मुझे आप सभी से नयी गूंज के इस अंक के माध्यम से रूबरू होने का मौका मिल रहा है।*

*हम कितना भी विकास कर लें किन्तु यदि समाज में संवेदना ही मर गई तो सब व्यर्थ है। इस संवेदनहीनता के चलते समाज में नकारात्मक ऊर्जा दिन प्रति.दिन बढ़ती जा रही है जो निन्दनीय भी है और विचारणीय भी। आवश्यकता है कि हम अविलम्ब इस दिशा में अपने प्रयास आरम्भ कर दें।*

*वस्तुतः अपने कर्मों से हम अपने भाग्य को बनाते और बिगाड़ते हैं। यदि गंभीरता से चिंतन.मनन किया जाय तो हमारा कार्य.व्यापार हमारे व्यक्तित्व के अनुसार ही आकार ग्रहण करता है और हमें अपने कर्म के आधार पर ही उसका फल प्राप्त होता है। कर्म सिर्फ शरीर की क्रियाओं से ही संपन्न नहीं होता अपितु मनुष्य के विचारों से एवं*

*भावनाओं से भी कर्म संपन्न होता है। वस्तुतः जीवन.भरण के लिए ही किया गया कर्म ही कर्म नहीं है हम जो आचार.व्यवहार अपने माता.पिता बंधु मित्र और रिश्तेदार के साथ करते हैं वह भी कर्म की श्रेणी में आता है। मसलन हम अपने वातावरण सामाजिक व्यवस्थाए पारिवारिक*

*समीकरणों आदि के प्रति जितना ही संवेदनशील होंगे हमारा व्यक्तित्व उतनी ही उच्चकोटि की श्रेणी में आयेगा।*

*आज के जटिल और अति संचारी जीवन.वृत्ति के सफल संचालन हेतु सभी का व्यक्तितत्व उच्च आदर्शों पर आधारित हो ऐसी मेरी अभिलाषा है।*

*यह ज़रूरी नहीं है कि हर कोई हर किसी कार्य मे परिपूर्ण होए परन्तु अपना दायित्व अपनी पूरी कोशिश से निभाना भी देश की सेवा करने के समान ही है। संपूर्ण कर्तव्यनिष्ठा से किया हुआ कार्य आपको अवश्य ही कार्य.समाप्ति की संतुष्टि देगा। कोई भी किया गया कार्य हमारी छाप उस पर अवश्य छोड़ देता है अतएव सदैव अपनी श्रेष्ठतम प्रतिभा से कार्य संपन्न करें। हर छोटी चर्या को और छोटे.से.छोटे से कार्य के हर अंग का आनंद लेकर बढ़ते रहना ही एक अच्छे व्यक्तित्व का उदाहरण है।*

*यह सर्वविदित तथ्य है कि नयी गूंज एक उच्च स्तरीय पत्रिका है जिसमें विभिन्न विधाओं में उच्चस्तरीय लेखों का अनूठा संग्रह है*

*आप सभी पत्रिका का आनन्द लें एवं अपनी प्रतिक्रियायें ऑनलाइन या ऑफलाइन भेजें।*

*नयी गूंज के माध्यम से हमारा आपका संवाद गतिशील रहेगा। आप सभी अपनी सुन्दर व श्रेष्ठ रचनाओं से नयी गूंज को निरन्तर समृद्ध करते रहेंगे इसी विश्वास के साथ।*

*अंत में मैं सभी सम्पादक मण्डल के सदस्यों एवं रचनाकारों को नयी गूंज पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन के लिए साधुवाद ज्ञापित करता हूं करता हूँ।*

*आप सभी को हार्दिक बधाई के साथ बहुत.बहुत धन्यवाद!!*

*कालिदास ने काव्य के माध्यम से कहा है-*

*पुराणमित्येव न साधु सर्वं*<br>
*न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।*<br>
*सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते*<br>
*मूढः परप्रत्ययनेय बुद्धिः।।*

*अर्थात् पुरानी ही सभी चीजें श्रेष्ठ नहीं होती और न नया सब निन्दनीय होता है। इसलिए बुद्धिमान व्यक्ति परीक्षा करके जो हितकर होता है उसी को ग्रहण करते हैं जबकि मूर्ख दूसरों का ही अन्धानुकरण*

*करते हैं।*

*अस्तु, निर्विवाद रूप से यह सभी स्वीकार करते हैं कि राष्ट्र की रक्षा, का सकारात्मक पक्ष होता है।*

**प्रकाशन सामग्री भेजने का पता**

**ई-मेल:goonjnayi@gmail.com**

**नयी गूंज इंटरनेट पर उपलब्ध है। www.nayigoonj.com पर क्लिक करें।**

**नयी गूंज में प्रकाशित लेखादि पर प्रकाशक का कॉपीराइट है**

**शुल्क दर 40/-**

**वार्षिक: 400/-**

**त्रैवार्षिक: उपर्युक्त शुल्क-दर का अग्रिम भुगतान 1200/-**

**को ----------------------------------------द्वारा किया जाना श्रेयस्कर है।**

## नियम निर्देश

**1 रचनाएं यथासंभव टाइप की हुई हों, रचनाकार का पूरा नाम, पद एवं संपर्क विवरण का उल्लेख अपेक्षित है।**

**2 लेखों में शामिल छाया-चित्र तथा आँकड़ों से संबंधित आरेख स्पष्ट होने चाहिए। प्रयुक्त भाषा सरल, स्पष्ट एवं सुवाच्य हिंदी भाषा हो।**

**3 अनुदित लेखों की प्रामाणिकता अवश्य सुनिश्चित करें। अनुवाद में सहायता हेतु संस्थान संपादक मंडल प्रकोष्ठ से संपर्क कर सकते हैं।**

**4 प्रकाशित रचनाओं में निहित विचारों के लिए संपादक मंडल प्रकोष्ठ उत्तरदायी नहीं होगा और इसके लिए पूरी की पूरी जिम्मेदारी स्वयं लेखक की ही होगी।**

## नई गूँज नियमावली

रचनाएं goonjnayi@gmail. Com ई-मेल पते पर भेजी जा सकती हैं। रचनाएं भेजने के लिए नई गूँज के साथ लॉग-इन करें, यह वांछित है।आप हमारे whatsapp no. 9785837924 पर भी अपनी रचनाएँ भेज सकते हैं

**प्रिय साथियों,**

**नई गूँज हेतु आपके सहयोग के लिए आपका हार्दिक धन्यवाद। आशा है कि ये संबंध आगे भी प्रगति के पथ पर अग्रसर रहेंगे। आगामी अंक हेतु आप सबके सक्रिय सहयोग की पुनः आकांक्षा है। आप सभी से एक महत्वपूर्ण अनुरोध है कि आप अपने शोध प्रपत्र निम्न प्रारूप के तहत ही प्रस्तुत करें जिससे कि हमें तकनीकी जटिलताओं का सामना न करना पड़े -**

**1.प्रकाशन हेतु आपकी रचना के मौलिक होने** का स्वतः सत्यापन **रचना प्रेषित करते समय "मौलिकता प्रमाण पत्र" पर हस्ताक्षर करना अनिवार्य है। इसके बिना रचना पर विचार करना संभव नहीं होगा**

**2. रचना कहीं पर भी पूर्व में प्रकाशित नहीं होनी चाहिए !**

3. आपकी रचनाएँ ए**म.एस. ऑफिस** में टाइप होना चाहिए

4. **फोंट** - कृतिदेव **10**, मंगल यूनिकोड

5. रचनाओं के साथ अपना पूर्ण पता, मोबाइल नंबर, ईमेल तथा पासपोर्ट साइज की फोटो लगाना अपेक्षित है !

6. आप लेख, कविता, कहानी, किसी भी विधा में रचनाएँ भेज सकते हैं !

## नई गूँज रचनाओं के प्रेषण सम्बंधित नियम व शर्तें :

एक से अधिक रचनायें एक ही वर्ड-डॉक्यूमेंट में भेजें।

रचनायें अपने पंजीकृत पेज पर दिए गए लिंक इस्तेमाल कर प्रेषित करें।

यदि आप हिंदी में टाइप करना नहीं जानते हैं, आप गूगल द्वारा उपलब्ध करवायी गयी लिप्यान्तरण सेवा का इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके लिए Google इनपुट उपकरण लिंक पर जाएँ।

**स-आभार**

**संपादक मंडल**

**Note:- प्रत्येक रचना लेखक की स्वयं मौलिक तथा लिखित है! इसमें लेखक के स्वयं के विचार हैं तथा कोई त्रुटि होने पर लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा!**

# अनुक्रमाणिका

# दिसम्बर 2022


| क्रम संख्या | विवरणिका | लेखक | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|---|
| | लेख – | | |
| 1 | काश कोई लौटा दे बचपन उन्हें | डॉ घनश्याम बादल | 1 - 3 |
| 2 | त्रिदेवों के अंश भगवान | गोवर्धनदास बिन्नानी | 4 - 6 |
| 3 | अविवाहिता | डॉ शिवा धमेजा | 7 - 10 |
| | कविता | | |
| 4 | माँ | बृजेश कुमार | 11 - 12 |
| 5 | हकीकत | विनोदमानवी | 13 - 14 |
| 6 | अंतर्नाद | गिरेंद्र भदौरिया | 15 - 19 |
| 7 | निशब्द | डॉ अदिति भारद्वाज | 20 - 21 |
| | कहानी | | |
| 8 | तुम जीते मैं हारा | रमेश मनोहरा | 22 - 24 |
| | गजल | | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 9 | ग़ज़ल | विज्ञान व्रत | 25 - 26 |
| | लघु कथा | | |
| 10 | अनुपम उपहार | बृजेश कुमार | 27 - 28 |
| | नारी तुम अबला नहीं सबला हो | | |
| 11 | महारानी अवंती बाई | | 29 - 32 |
| 12 | ऐतिहासिक स्थल एक नजर<br>भटनेर का दुर्ग (राज.) | | 33 - 34 |
| 13 | साक्षात्कार- 2022 में आरजे एस<br>बने महावीर सैनी | | 35 - 39 |

**बालदिवस पर विशेष :**

# काश कोई लौटा दे बचपन उन्हें !

डॉ घनश्याम बादल

प्रायः देखने में आता है कि बच्चों पर बड़े , हुक्म की तलवार ताने बैठे रहते हैं । बिना यह सोचे कि बच्चों की भी अपनी एक सोच होती है , सपने होते हैं , उनका भी अपने तरीके से कुछ करने का मन होता है और हम यह मान लेते हैं कि वें तो बच्चे हैं , मासूम व नादान उन्हे सही ग़लत का क्या पता । मगर इसी सच का दूसरा पहलू यह है कि बच्चों के बारे में शायद उनसे बेहतर कोई नहीं जानता ।

अगर हम उनकी सोच, सपनों, कल्पनाओं, समस्याओं व ज़रुरतों को समझ सकें, उन्हें इच्छित प्यार दें तो उनके लिए बाल दिवस सार्थक जाएगा ।

बाल साहित्यकार सोचें कि बच्चों के लिए जो भी लिखें वह केवल उपदेश बाजी न होकर, बच्चों की सोच व उनके उपयोग व रुचि का हो, परियों, राक्षसों की कहानियों के बजाय विज्ञान सम्मत हो , भविष्य की सोच वाला हो तो ऐसा बाल साहित्य भी उनके लिए बेशकीमती उपहार होगा ।

आज दुनिया के सबसे युवा देश बाल दिवस मना रहा है । पर , आज भी देश में बच्चे सबसे ज्यादा उपेक्षित हैं । न स्कूल उन्हे वह दे रहे हैं जो उन्हे चाहिए न ही 'मॉम-डैड' के पास उनके लिए समय है । इस बाल दिवस माता पिता व अभिभावकों को सजग बनाने की ज़रुरत है । सबसे पहले तो हमें उस जगह पर खास ध्यान देने की ज़रुरत है जहां बच्चों का सबसे ज़्यादा वक्त बीतता है और यें दो स्थान हैं घर व स्कूल ।

घर पर बच्चे सबसे ज्यादा सुरक्षित होते हैं और सबसे ज़्यादा खुलकर जीते व खेलते,खाते हैं पर जैसे जैसे संयुक्त परिवारों रहे हैं ,माता - पिता काम काज करने के लिए बाहर रहने लगे हैं घर भी अब बच्चों के लिए न 'प्रिय स्थान' रह गया है और न ही सुरक्षित । नौकरों के भरोसे पलने वाले बच्चे एक असुरक्षा भाव से त्रस्त रहते हैं। उनमें दूसरों पर विश्वास न करने की भारी प्रवृत्ति पाई गई है ऐसा शायद इसलिए हुआ कि उन्हे उनके मां - बाप ही सदैव सतर्क रहने की बात कहते रहते हैं । हम अपने बच्चो के लिए एक निष्छल, मासूम व निश्चिंत नहीं बचपन दे

पाएं हैं ? इस बाल दिवस पर यदि यह दें तो बच्चों के लिए यह उपहार बेशकीमती तोहफा होगा ।

आप उन्हे महंगे से महंगे स्कूल में तो भेज सकते हैं पर यह मान लेना कि भारी भीड़ - वाले इन स्कूलों से बच्चे सुसंस्कृत होकर निकलेंगे तो आप भ्रम में हैं । वहां भी उन्हे उच्च ग्रेड पाने की कला तो सिखाई जा रही है पर , उनका 'भावनात्मक संवेग' बहुत निम्न होता जा रहा है । इसका मतलब यह हुआ कि स्कूलों ने कमाई की मशीनें तो बना ली पर मानवता के प्रति दायित्व , दया, प्रेम करुणा , ममता व सहायता करना जैसे मूलभूत गुण नहीं सिखाए । आज के बच्चो व कल के नागरिक हैं अगर हम यें मानवीय गुण उन्हे दे पाएं तो इस बार का बाल दिवस सार्थक हो जाए ।

भौतिकता की अंधी दौड़ , अधिक से अधिक पा लेने की चाहत, समाज में उच्च स्थान पाने की होड़ व हर समस्या का हल पैसे में ढूंढने की प्रवृत्ति और लगातार घटती संवेदनशीलता तथा अति व्यस्तता की शिकार दिनचर्या भले ही भौतिक रूप से हमें समृद्ध बना रही हो ,घरों में सुविधाएं व सुख के साधन बढ़ गए हों , पर , इन सब का सबसे बुरा असर यदि किसी पर पड़ा है तो वें हैं बच्चे । बच्चो से उनका बचपन लगभग छिन गया है । काश हम लौटा पाएं अपने बच्चो के बचपन में मस्त हो बेफिक्री से खेलने, उछलने-कूदने, शरारतें करने के दिन उन्हे समय से पहले बड़े या बूढ़े होने से रोकने की एक सार्थक मुहिम भी आज के बच्चो के लिए एक यादगार गिफ्ट होगा ।

आज के वातावरण के चलते शारीरिक विकास के स्तर पर लड़के 14 की उम्र में ही ऐसे लक्ष्ण प्रदर्शित कर रहे हैं जो एक युवा में होते हैं । वैसे इसके पीछे खान-पान की बदली प्रवृत्ति व उपलब्धता को ज्यादा उत्तरदायी माना जा रहा है। प्रायः वह अपनी उम्र के बच्चों के साथ बाहर खेलने - कूदने की बजाय कम्प्यूटर गेम्स खेलना ज्यादा पसंद करते हैं । तो गेम्स को ही बालमन व नैतिक मूल्यों के अनुरूप ढालना भी एक शानदार उपहार होगा बच्चों के लिए ।

समय से पहले शारीरिक रूप से जवान दिखने वाले बच्चो के प्रति मां - बाप को ज्यादा जागरुक रहना होता है , क्योंकि ऐसे बच्चे दिखते भले ही बड़े हों पर मानसिक रूप से वें अपरिपक्व ही होते हैं और गलत तत्व इसी बात का फायदा उठाने का प्रयास करते हैं । विशेष रूप से लड़कियों के मामले तो अब बहुतायत में देखने सुनने में आ रहे हैं अतः समय की मांग है कि हम भी उन्हे 'अभी बच्ची ही तो है' कह कर नजरअंदाज न करें अपितु उनकी जरुरतों का पूरा ख्याल रखें ।

अच्छे मां बाप के लिये जरुरी है कि वह बच्चो से मित्रवत् व्यवहार करें। उनकी उत्सुकताओं को शांत करें , बात - बात पर उन्हे डांट - फटकार कर चुप करने से आप का काम तो सरल हो सकता है पर बच्चा अपने भोलेपन व अज्ञानता के चलते गलत संगति या गलत हाथों में भी पड सकता है । तब आपके सामने सिवाय पछताने के कुछ भी नहीं बचेगा इसलिये बेहतर यही होगा हम अपने बच्चे को उचित समय पर ही सम्हाल लें । उसे बेझिझक वह सब बताएं जो उसकी जरुरत है । यदि हम नहीं बताएगें तों वह सस्ती किताबों या नेट अथवा अपने दोस्तों या ऐसे लोगों से जानेगा जो हो सकता है उसके व आपके हितैषी न हों ।

अच्छा होगा कि हम सरकार या व्यवस्था की ओर ताकने की बजाय अपने आप ही अपने बच्चो का ख्याल रखें , उन्हे सही दिशा दें , उनकी प्रशंसा करें , उन्हे समझाने का प्रयास करें व अवसर दें ताकि वें आती हुई किशोरावस्था का आनंद ले सकें ।

तो आइए, इस बार इस अंदाज़ में बच्चों को बाल दिवस का उपहार दें ।

# त्रिदेवों के अंश भगवान दत्तात्रेय

गोवर्धन दास बिनानी

पौराणिक कथानुसार ब्रह्माजी के मानस पुत्र सप्त ऋषियों में से एक महर्षि अत्रि व प्रजापति कर्दम ऋषि की पुत्री और सांख्यशास्त्र के प्रवर्तक कपिल देव की भगिनी सती अनुसूया के यहां त्रिदेवों के अंश से तीन पुत्र सबसे पहले ऋषि दुर्वासा , फिर चन्द्रदेव उसके बाद दत्तात्रेय ने जन्म लिया।

चूंकि भगवान दत्तात्रेय को शैवपंथी प्रभु शिव का अवतार तो वैष्णव पंथी प्रभु विष्णु का अंशावतार मानते हैं और सती अनुसूया की पति-भक्ति के कारण उनकी सतियों की गणना में सबसे पहले होती है इसलिये कुछ लोगों का यह स्वाभाविक प्रश्न हो जाता है कि फिर ये इनके पुत्र कैसे हुये। इसलिये इस जिज्ञासा के समाधान हेतु उस घटना से आप सभी को अवगत करा रहा हूं जिसके चलते इनका जन्म सती अनुसूया के गर्भ से हुआ। वह घटना इस प्रकार है –

एक बार ब्रह्माणी, विष्णूवक्षा व गौरी में यह जानने की प्रबल इच्छा जागी कि सर्वश्रेष्ठ पतिव्रता कौन है ? जब यह निर्णय हो गया कि अत्रि पत्नी अनुसूया इस समय न केवल सर्वश्रेष्ठ पतिव्रता है बल्कि सतियों की गणना में भी वे पहले स्थान पर हैं तब इन तीनों ने अपने अपने स्वामियों से भूलोक जा कर पतिव्रता अनुसूया की परिक्षा लेने का आग्रह किया। इस आग्रह के परिणामस्वरूप  तीनों देव अर्थात ब्रह्मा, विष्णु व महेश ब्राह्मण वेश धारण कर महर्षि अत्रि के आश्रम उस समय पहूंचे जब महर्षि आश्रम के बाहर कहीं गये हुये थे।

सती अनुसूया ने उनका यथोचित सत्कार किया और पधारने वास्ते आभार भी प्रकट किया। तत्पश्चात तीनों ने भिक्षा की मांग तो की, सो तो ठीक, लेकिन एक शर्त भी लगा दी जिसके अनुसार सती को एकदम नग्न हो कर भिक्षा देनी थी अन्यथा वे भिक्षा नहीं लेंगे। इनकी शर्त जान सती धर्मसंकट में उलझ गयीं लेकिन फिर थोड़ा संभलकर उन्होंने मन्त्र का जाप कर

अभिमन्त्रित जल को उन तीनों ब्राहमण वेश धारण किये त्रिदेवों पर ड़ाल दिया। अभिमन्त्रित जल के छीटों से तीनों तुरन्त प्रभाव में छोटे छोटे बालक अर्थात शिशु रूप में बदल, सती अनुसूया के गोद में खेलने लगे। इस तरह तीनों को शिशु रूप में पा सती ने तीनों को स्तनपान करा भिक्षा वाली बात पूरी की।

इसी बीच एक तरफ तो महर्षि आश्रम लौट, जब यह सब नजारा देखा तब अपनी आंखें बन्द कर तपबल से सारी परिस्थिति से अवगत हो गये और दुसरी तरफ जब ये तीनों देव वापस स्वर्ग नहीं लौटे तो माता सरस्वतीजी के साथ साथ माता लक्ष्मीजी व माता पार्वतीजी चिन्तित हो, तीनों सती अनुसूया के पास पहूंची। उन तीनों ने वहां जब सारी हकीकत देखी तब बिना किसी भी प्रकार के संकोच किये सती से अपने अपने स्वामियों को वापस कर देने का आदरपूर्वक आग्रह किया।

सती अनुसूया व महर्षि अत्रि ने उनका आग्रह स्वीकारते हुये विनम्रतापूर्वक यह आग्रह कर निवेदन कर दिया कि जब इन त्रिदेवों को सती ने स्तनपान कराया है तब इन्हें किसी न किसी रूप में हमारे साथ रहना पड़ेगा। तत्पश्चात उन त्रिदेवों ने उनके आग्रह को स्वीकारते हुये सती के गर्भ में दुर्वासा, चन्द्रदेव व दत्तात्रेय के रूप में अपने अवतारों को स्थापित कर दिया। लेकिन जब सती अनुसूया ने दुर्वासा को जन्म देने के पश्चात चन्द्रदेव को भी जन्म दे दिया लेकिन जब तीसरे शिशु का जन्म न हो पाया और सती को प्रसव पीड़ा होती रही तब ब्रहमदेव व शिवजी को सारी बात समझ में आ गयी तब उन लोगों ने फिर अपने अपने कुछ अंश भेजें जिसके चलते भगवान दत्तात्रेय को गर्भ में ही तीन सिर और छः भुजा में हो ग्रीन। इस प्रकार भगवान दत्तात्रेय मार्गशीर्ष की पूर्णिमा को जन्मे।यही कारण है जिसके चलते भगवान दत्तात्रेय ब्रहमा-विष्णु-महेश के अवतार माने जाते हैं।

भगवान दत्तात्रेयजी का यह दृढ़ विश्वास था कि जिससे भी ज्ञान,विवेक व किसी भी प्रकार की कोई भी शिक्षा मिले वह ग्रहण करें भले ही वह पशु-पक्षी हो या प्रकृति का कोई भी अंश। यही कारण था जिसके चलते उन्होनें १) पृथ्वी २) जल ३) वायु ४) अग्नि ५) आकाश ६) सूर्य ७) चन्द्रमा ८) समुद्र ९) अजगर १०) कपोत ११) पतंगा १२) मछली १३) हिरण १४) हाथी १५) मधुमक्खी १६) शहद निकालने वाला १७) कुरर पक्षी १८) कुमारी कन्या १९) सर्प २०) बालक २१) पिंगला वैश्या २२) बाण बनाने वाला २३) मकड़ी २४) भृंगी कीट वगैरह का

अध्ययन कर जो कुछ इनसे सीखा उसको अपने जीवन में ही नहीं उतारा बल्कि इन चौबीसों को गुरु बना लिया ।

आप सभी के ध्याननार्थ भगवान दत्तात्रेयजी की कृपा से गुरु गोरखनाथ जी को आसन, प्राणायाम,योग वगैरह का ज्ञान प्राप्त हुआ। इसी तरह भक्त प्रह्लाद को अनाशक्ति-योग का उपदेश दिया। ऐसा माना जाता है कि इन्होंने परशुरामजी को श्री-विद्या मंत्र प्रदान किया था और शिवपुत्र कार्तिकेय को भी अनेक विद्यायें प्रदान की थीं।

भगवान दत्तात्रेयजी आजन्म ब्रहमचारी, अवधूत और दिगम्बर रहे थे।इनकी आराधना से बहुत ही जल्दी सफलता प्राप्त हो जाती है।भगवान दत्तात्रेय को सही तरीके से सभ्य जीवन जीने व व्यक्तियों का मार्गदर्शन करने के लिए जाना जाता है।

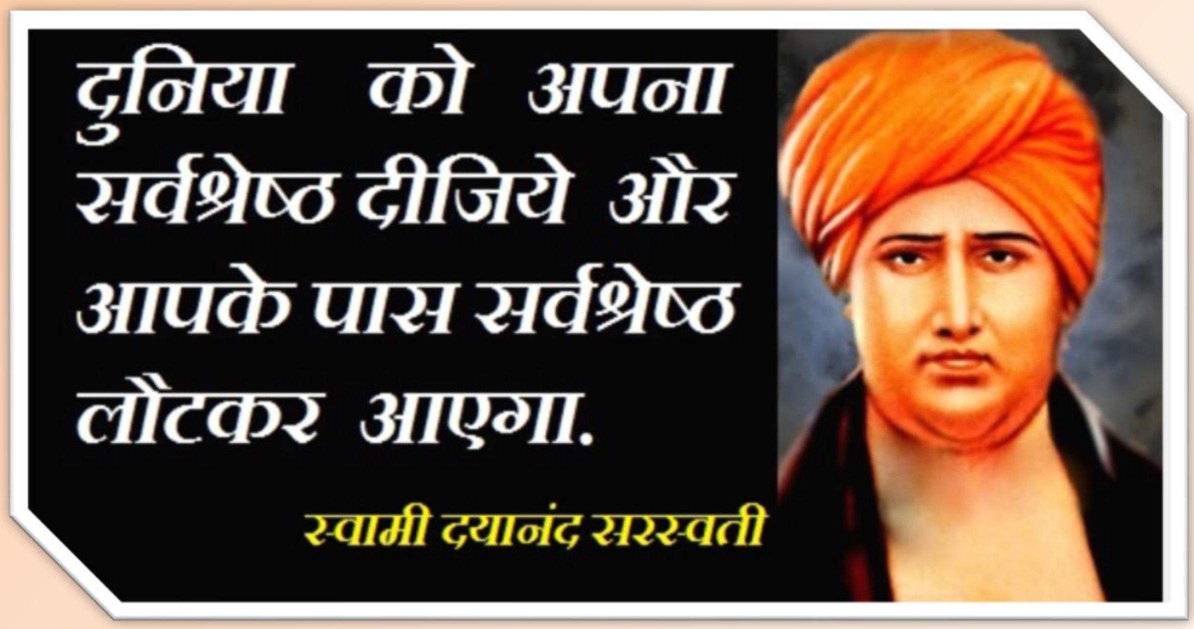

# अविवाहिता

डा. शिवा धमेजा

**ज़ब सम्बन्ध गहरे हों तो जरूरत ही कहाँ होती है शब्दों की तुमने कभी नहीं कहा कि तुम मेरी ! मौज़ूदगी से भी असहज हों जाते हों ज़ब भी तुम्हें इस तरह के भावों से भरे हुए देखती हूँ !, लगता है जैसे मेरे व्यक्तित्व पर कुछ संदेह है इतना दर्द होता है कि भीतर के रिसते घाव की ! छुपाने की बहुत कोशिश करती हूँ ! मैं फिर पोंछ लेती हूँ ! तरह लगातार आँखे भरती है, पर अगर फिर भी सफल ना हों पाऊँ तो आँखे भर आने का कोई भी कारण बोल देती हूँ कहते हैं ! कि लिखने में अगर मिलावट कर दी जाये तो रचना जीवंत बन ही नहीं सकती, नाटकीय लगने लगती है बिल्कुल वैसे जैसे मेकअप लगी महिला और मुझे मेकअप बिल्कुल पसंद नहीं ! ...........इसलिये**

**सामाजिक रूप से समाज के बने नियमों का उल्लंघन करने वाली मैं अविवाहिता, इस समाज के हर विवाहित इंसान के सामबे बहुत छोटी, नगण्य , हीन, अपमानित हों जाती हूँ, मानो विवाह न करके, मांग में सिंदूर और लाल बिंदी न लगाकर मैंने कोई अपराध ही कर दिया हो मानो !**

रहना कोई ब अविवाहितहुत बड़ा पाप हो मैं अपने शब्दों में अपनी आत्मा से इस दर्द क़ो बयां ! करती हूँ कि

कोई महिला अगर खुद क़ो पुरुष क़ो छूने का लाइसेंस नहीं देती तो क्या ये इतना गलत होता है ?

क्या एक महिला क़ो अपने पवित्र होने का सबूत विवाह करके देना होता है !

इस समाज की पवित्रता की कसौटी अद्भुत है जहाँ अपमानित उसे होना होता है जिसने स्वेच्छा से स्वयं क़ो सन्यास में रखा हो,..........!

जिसे आजीवन पुरुष के स्पर्श की आवश्यकता नहीं, अपवित्र वही है इस समाज में ? जिसे राग नहीं ?

अजब ही रंग हैं दुनिया के जो सफ़ेद चादर पर गंदगी लगाने का प्रयास करते हैं..........

निश्चित ही तर्क वितर्क पर आ जाये तो अनेक जवाब सामने आ जायेंगे सामाजिक वक्ताओं की ओर से इस विषय पर.....

विवाहिता के बगल में ज़ब पति चलता है तो उसके किसी अंदाज पर कोई प्रश्न ही नहीं लगाया जाता क्योंकि विवाहिता है, आसान तरीके से कहें तो ठप्पा लग चुका है !

और अविवाहिता कदम कदम पर सवालों का सामना करती है, ?

शुरुआत होती है ज़ब कोई बेटी ये घोषणा ही कर देती है पापा मुझे शादी नहीं करनी वहीं से समाज की आवाज़े जान पहचान के घर घर में सुनाई देने लगती हैं शुरुआत होती है इन शब्दों से...........

कोई पसंद होगा इसलिए.........

ये समाज क़ो आइना है एक बेटी का दिखाया हुआ आइना !

मैं जिस भी रूप में जहाँ भी ख़डी हुई लगा जैसे हर कहीं मेरे सम्मान के साथ मज़ाक हो रही है ,

अब उठना बैठना चुप रहना या बोलना, हंसना या रोना कुछ भी ऐसा नहीं जिस क़ो करते समय में गलत नहीं इस समाज क़ो कतैई क़तैई पसंद नहीं कि बने नियमों का कोई विपरीत करे !,जो मैंने किया ! विवाह नाम की सामाजिक संस्था का विरोध और त्याग !

नहीं पता था कि जीवन की शक्ल ऐसी होगी, हाँ ये सत्य है कि ऐसे जीवनो से ये अपेक्षा होती है कि समाज में उदाहरण बनकर दिखाना चाहिए तभी समाज सम्मान और ऐसे फैसले क़ो स्वीकृति देता है

लेकिन अगर किसी क़ो विशेष ना बनकर साधारण ही बनना जीवन की सार्थकता लगती हो तो ?

क्या आवश्यक होता है कि वो कर्म ही किये जाएं जो छापे जाते हों किताबों में, केवल वो ही सार्थक होते हैं ?

क्या चिल्ला चिल्ला कर शोर मचाकर सफलता का, उपलब्धियों का गुणगान करना ही सफल होने का प्रमाण होता है ?

अविवाहिता होकर जैसे समाज प्रतिपल सवालिया रूप धारण कर लेता है हँसी तो क्यों !, रोई तो किसके लिए ?

हर सच क़ो संदेह भरी नज़रों से देखा जाता है !

समाज तभी शायद खुले दिल से इस बात क़ो सम्मान पूर्वक स्वीकार कर पाता है ज़ब हम सफ़ेद वस्त्र धारण कर, केशलंचन कराकर साध्वी रूप में रहें परिवारों में रहने की शायद हमें ! ! अनुमति नहीं होती'

ये जीवन ऐसे बदसूरत रूप में हो जायेगा कभी सोचा भी नहीं था !

जिस निर्णय के लिए सम्मान देना चाहिए था, उसी के लिए अपमान ?

अनेकों प्रश्न हैं अनुत्तरित.......

# माँ

बृजेश कुमार

मां ममता की मूरत,
वात्सल्य की खान है,
माँ ही जन्म दात्री,
बच्चों का लाड है,
मां के बिना कोई दिन,
हो नहीं सकता,
मां के बिना बच्चों का,
लाड हो नहीं सकता,
मां मंदिर में बैठे उस,
भगवान के समान है,
जिस की सेवा करना ही,
सारे तीर्थों के समान है,
मां धैर्य, करुणा,
संयम की खान है,
मां का दर्जा,
जगतगुरु के समान है,
मां त्याग, तपस्या,
उदारता की मूरत है,
मां के बिना ना कोई,
दुनिया की सूरत है,

माँ ही सर्जन और,

पालन कर्ता करता है,

माँ ही सृष्टि को,

चलाने वाली सत्ता है,

मां के जैसा दुनिया में,

कोई हो नहीं सकता,

मां के लिए कोई दिन,

विशेष हो नहीं सकता,

मां है तो हर दिन उत्सव है,

मां नहीं तो जीवन निर्थक है!

# हकीकत

एक अमीर ने, एक मकान बनाया
उस अमीर ने उस
मकान को हर किसी को दिखाया
अमीर को बुलाया
तो पहले चाय -पानी पिलाया
नाश्ता करवाया
फिर मकान दिखाया
फिर एक दिन
गरीब को बुलाया
ऊपर-ऊपर घुमाया
गरीब को,
पैसे का खर्च
बडे चाब से बताया
लगा बीस लाख, चालीस बताया
गरीब था
विचारा क्या करता
तारीफे करने लगा
मगर उस अमीर ने ,
ना उनको कमरे मै बैठाया
ना पानी पिलाया

ना चाय बनवाई , ना नाश्ता खिलाया

बस

उस अमीर ने गरीब पर बोझ उठवाया

अमीरो की यह बात

गरीब को रास नही आई

मुफ्त में

बोझ उठवाकर

तेरी अमीरी की

एक कप चाय नही पाई

धिकार है ।

ऐसी अमीरी को

गरीब के लिए

एक कप चाय नही आई 2

विनोद मानवी

# अन्तर्नाद

गिरेंद्र सिंह भदौरिया

(यह रचना रूस और यूक्रेन के विनाशकारी युद्ध को शान्त करने के लिए कवि गिरेन्द्र सिंह भदौरिया "प्राण" का अन्तर्नाद है।)

हा त्राहिमाम! हा त्राहिमाम! हा त्राहिमाम! की सुन पुकार।
क्रन्दन कर उठा हृदय कवि का, शिशुओं का सुनकर चीत्कार।।

ख़ाकीन कर दिया पतनों ने, दे दी पछाड़ उत्थानों को।।
आ रहा पसीना पथरीली, काँपती हुई चट्टानों को।

हिल उठे कलेजे शिखरों के, घाटियाँ सिकुड़ कर चीख उठीं।
मौतें हो उठीं मुखर मौनी, लाशों पर नर्तन सीख उठीं।।

आ गया ज्वार उन लहरों में, जो कभी आज तक उठीं न थीं।
गुँथ गईं युद्ध में वे कड़ियाँ, जो एक सूत में गठीं न थीं।।

लग रहा अधकटे रुण्डों की, कर उठी भैरवी खेती हो।
या मुण्डमाल के लिए पुनः, काली रण चण्डी चेती हो।।

या महाकाल की खुली आँख, तीसरी ध्वंस की बेला है।
या स्वयं कालभैरव ने आ, जग को इस ओर धकेला है।।

धरती की छाती छेद उठे, धरती पर बने बनाए बम।
दहला दी दुनिया दहशत से, हो रही बमों की बम बम बम।।

टी वी की छाती से निकले, परिदृश्य दिखाई देते हैं।
कुछ सत्य और कुछ भ्रमकारी, सन्देश सुनाई देते हैं।।

इस ओर विवश यूक्रेन खड़ा, उस ओर रूस की दमदारी।
इस ओर गुरिल्ला वारों से, उस ओर दनादन बमबारी।।

इस ओर कराहें दबी दबी, उस ओर गर्जना गर्वीली।
इस ओर आह तक पीली है, उस ओर वाह तक रौबीली।।

इस ओर चतुर्मुख धुआँ धुआँ, उस ओर फूटते फव्वारे।
इस ओर जी उठा ध्वंस राग, उस ओर नृत्य द्वारे द्वारे।।

इस ओर ध्वस्त हो गया सृजन, उस ओर अहम् है मस्तक पर।
इस ओर भुखमरी पेटों की, उस ओर दम्भ है दस्तक पर।।

इस ओर थम गई किलकारी, उस ओर लग रहे अट्टहास।
इस ओर झर चुके पारिजात, उस ओर सुर्ख होता पलास।।

क्या नई भूख के प्यासों को, पानी न मिला पाताल तलक।
जो माँस चबा पी उठे खून, छोड़ी न नरों मे खाल तलक।।

आखिर किसने जीवन्त देश, शमशान बना कर छोड़ दिया।

किसने मदमाते सिंहों के, सामने मेमना मोड़ दिया।।

किसके बल पर यह मेष पुत्र, किसकी बातों में बहक गया।

वे कहाँ गए हित के रक्षक, जिनके कारण सब दहक गया।।

सबसे ताकत वर मैं ही हूँ, बस यही सिद्ध कर पाने को।

हिंसक पशुओं में सदा युद्ध, होते हैं भूख मिटाने को।

मानव मानव को मारेगा, जग को विनाश समझायेगा?

जंगली सभ्यता पनपेगी, क्या यह विकास कहलायेगा??

जिस मानवता की जड़ें त्याग, सहयोग दया पर जमी रहीं।

वीरता विनय के साथ क्षमा, की भाव भूमि पर टिकी रहीं।।

जिस बुद्ध जीव की अण्डज क्या, पिण्डज पर पहरेदारी थी।

स्वेदज उद्भिज जड़ जंगम की, रक्षा की जिम्मेदारी थी।।

असहाय लगा वह नरपुंगव, नैतिकता नीति विहीन लगी।

हो उठी बली फिर दानवता, ऐसी मानवता दीन लगी।।

रो रही धरा रो रहा गगन, रो उठा नर्क का द्वार द्वार।

आँखों से झरने फूट पड़े, हा –हा खा –खा कर बार बार।।

रोको रोको यह महायुद्ध, यह महानाश का कारण है।
यह द्वन्द्व नहीं है बातों का, यह प्रलय भयंकर भीषण है।।

यदि रोक न पाए महानाश युग को कलंक लग जायेगा।
इस धवल कीर्ति की काया पर, मल भरा पंक लग जायेगा।।

गिर पड़ी कहीं बारूदों के, ढेरों पर जीती चिनगारी।
स्वाहा कर देगी सकल सृष्टि, बदला लेने की जीदारी।।

फिर कौन बचेगा महफ़िल में, क्या प्राण बिना तन डोलेंगे ?
कोयलें कहाँ पर कूकेंगीं , किस तरह पपीहे बोलेंगे ??

बेला गुलाब रजनीगन्धा, चम्पा कनेर मिट जायेंगे?
होगी दुर्गन्धित दिशा दिशा, क्या सभी पुष्प मर जायेंगे ??

पेड़ों से लिपटीं बल्लरियांँ, कोपलें उमगती शाखों से।
हर ओर चटकती कली कली, क्या देख सकोगे आँखों से ??

ये खिले बगीचे रंग भवन, रम्भा सी इठलाती परियाँ।
मद भरी जवानी तरुणों की, मद बिन मदिराती सुन्दरियाँ।।

क्या रूप रूठ कर बैठेगा, क्या रंग मनाने आयेगा ?
क्या किलक सकेगी किलकारी, क्या जीवन राग सुनायेगा ??

वह बनक ठनक प्रेमानुराग, रुतबा रुआब किसका होगा ?
फिर कौन करेगा प्रश्न यहाँ, कैसा जवाब किसका होगा ??

क्या मौत ठहाके मार मार,जीवन को और चिढ़ायेगी ?
कटुता क्या इतनी कटु होगी, करुणा को मार भगायेगी ??

लहराती नदियों की कल कल, फिर कौन सुनेगा दुनिया में ?
झरनों से झरते सपनों को, फिर कौन बुनेगा दुनिया में ??

क्या कमी आज आ गई कहो, सोचो समझो फिर तो तय हो ।
हो किसी तरह यह युद्ध बन्द, हर ओर शान्ति का निर्णय हो।।

हाँ वही शान्ति जो जीवन में, जीवन का मूल्य बताती है।
हाँ वही शान्ति निष्प्राणों में, जो प्राणी भाव जगाती है।।

आती आँधी हो शमित दमित, हों शान्त अग्नि चारों आकर।
हों धरा गगन जल शान्त पवन, भूकम्प मेघ नदियाँ सागर।।

ज्वाला मुख गिरि हों शान्त शान्त, नग शान्त शक्तियाँ औषधियाँ।
मन के विकार हों शान्त शान्त, ब्रहमाण्ड खण्ड बहती नदियाँ।।

ॐ शान्ति:।।ॐ शान्ति:।।ॐ शान्ति:।।

# निशब्द

अदिति भारद्वाज

स्तब्ध हूं निशब्द हुं
इक इंसान आज स्तब्ध है
इंसानों की बर्बरता पर निशब्द है।

वो जीना चाहे तो अस्मिता खतरे में
मर जाए तो कोई विधि-विधान नहीं।
कहते हैं रात में अकेली महफ़ूज़ नहीं
पर क्या उजाले में घबराती उसकी जान नहीं?
अपरिणीता को खुला कोष समझते हैं पर
ब्याहता को सुरक्षित कहना भी आसान नहीं।

हर नारी आज शर्मिंदा है
अफसोस है उसे वो
मर कर भी ज़िंदा है ।
सुन्न है आत्मा उसकी
सोच रही है अब किसे जनूं ।
बलात्कारी को जन्म दूं
या पीड़िता की मां बनूं ।
क्या समझूं? क्या सुनूं?

यह, कि ख़ज़ाना है हर उम्र में लड़की

या सब नज़र दोष है, यह तर्क चुनूं।

अवाक है हर महिला, बेहद,

देख तमाशा इस समाज का

जो मूरत को मां सा पूजता भी है

प्राणों को जड़ कर असहमति से छूता भी है।

नारी सशक्तीकरण में निजी स्वार्थ ढूंढ कर

एक के चीरहरण को दूसरे की पीड़ा से तोलता भी है।

सकते में है हर औरत आज

नदारद आचरण से इंसानियत है

धिक्कार है आज उस मानवता पर

जिसकी परिभाषा

बेबसी या हैवानियत है।

# तुम जीते मैं हारा

रमेश मनोहरा

“सुनती हो!” लाजो ने अब पलटकर देखा, एक युवक कब से न जाने उसके पीछे.पीछे चला आ रहा है! जब वो संगीता मिश्रा मैडम के यहाँ से बर्तन झाड़ू, बुहार करके अपने घर लौटती है! तब इसी युवक को चौराहे पर खड़ा रोज देखती है और उसे घूरता है! मगर आज तो शायद चौराहे से ही पीछे.पीछे आ रहा था! उसने रूककर पीछे मुड़कर देखा, तब तक वह युवक पास आ चुका था! तब वह बोली. आपने आवाज दी थी!

“हाँ मैंने दी थी!” प्रसन्न होकर युवक बोला!

“कहिये क्या काम है मुझसे ?” लाजों ने आँखें दिखाते हुए कहा!

“काम तो आपसे है आप बुरा तो नहीं मानोगी ?” युवक ने यह कहकर मुस्करा दिया

“ए मिस्टर यह बात आपने कैसे कह दी, न जान न पहचान!”

“पहचान तो हमारी हो गई!” शरारत भरे अन्दाज में युवक ने कहा!

“कैसी बातें कर रहे है आप, न मैं आपको जानती हूँ और न आप मुझे जानते है फिर कैसे कह दिया, हमारी पहचान हो गई!”

“देखो मैडम आपने बात कर ली यही तो हमारी पहचान है!”

“कैसी बेवकूफ भरी बातें कर है आप ?” लाजो गुस्से से बोली- चार दिन से तुम मुझे इस चौराहे से देख रहे हो!

“बस आपसे दोस्ती बढ़ाना चाहता था!” युवक बोला

“ए मिस्टर मुझे तुमसे दोस्ती नहीं करना........तुम जैसे आवारा लड़कों का क्या भरोसा?”

“जैसा आप समझ रही है वैसा नहीं हूँ!”

“ए मिस्टर अपनी होशियारी मत दिखा, तुम जैसे युवक को अच्छी तरह जानती हूँ! फूटो यहाँ से, एक अकेली लड़की को देखकर गले पड़ रहे हो!” लाजो उसे डाँटती हुई बोली!

“देखिए मैडम आप तो व्यर्थ का गुस्सा कर रही है आप मुझे नहीं जानती है! मगर मैं आपको जानता हूँ! आप संगीता मेम के यहाँ मेहरी का काम करती है!” जब युवक ने यह बात कहीं तब लाजो बोली- हाँ करती हूँ , तुम्हें इससे क्या?

“संगीता मेम आपको कितने रूपयै महिना देती है ?”

“आपसे मतलब?” लाजो ने प्रश्न पूछा!

“मेरे पूछने का मतलब यह है कि संगीता मेम आपको महिने का हजार दो हजार देती होगी! यदि आपको दस हजार रूपयै प्रतिमाह मिले, तब वहाँ काम कर सकोगी?” लालच देते हुए उस युवक ने कहा! यह सुनकर लाजों के मन में भी लालच जाग उठा! उसने कोई जवाब नहीं दिया! तब कुछ क्षण इस पर गंभीरता से विचार करने लगी! जब उसने कोई जवाब नहीं दिया! तब उस युवक ने फिर पूछा- क्या सोच रही है?

“मुझे काम क्या करना पड़ेगा?” लाजो ने जब यह प्रश्न पूछा.......तब युवक ने कोई जवाब नहीं दिया! वह सोचने लगा तब वह अतीत में पहुँच गया, उसके मित्र ने उस दिन कहा था!. इस लड़की को जानते हो?

“हाँ जो संगीता मेम के यहाँ काम करती है!” उस युवक ने कहा!

“बड़ी बोल्ड लड़की है!” मित्र ने कहा! किसी को घास नहीं डालती है

“अरे मेरी दौलत के आगे ये क्या अच्छी.अच्छी लड़कियाँ पिघल जाती है! तब ये किस खेत की मूली है?” जोश से उस दिन अपने मित्र से कहा था!

“ऐसी बात है तो लगाओ शर्त?” मित्र ने जोश बढ़ाते हुए कहा!

“लगी शर्त, मुझे क्या करना है?”

“इसे पिघलाकर अपना हम बिस्तर बना सको तो जानता हूँ कि तुम्हारे पैसे में कितनी ताकत है!”

“यह तो मेरे बाँये हाथ का खेल है!” जोश में आकर उसने कहा- उसे अधिक पैसे देकर घर पर मेहरी रख लूंगा!

“मगर एक बात तो स्पष्ट कहता हूँ काम देने के पहले उससे स्पष्ट शर्त रखनी होगी कि मेरा हम बिस्तर भी बनना पड़ेगा!”

“तुम्हारी यह शर्त भी मंजूर है मित्र............देखना उसको अपने यहाँ नौकरानी बनाऊँगा कि तुम्हें मेरा बिस्तर भी गर्म करना पड़ेगा!” उसने शर्त स्वीकार करते हुए कहा था! देखो मेरे बाप के पास बहुत पैसा है!

बस तब से वो लाजो के पीछे पड़ा हुआ है!

“ओ मिस्टर कहाँ खो गये?” जब लाजो ने यह बात कहीं तब वह अतीत से वर्तमान में लौटा! लाजो बोली - कहाँ खो गये थे?..........मैं पूछ रही हूँ काम क्या करना पड़ेगा?

“यही घर का सारा काम जो संगीता मेम के यहाँ करती हो?” उस युवक ने उत्तर देकर कामुक दृष्टि उसके उभारों पर डाली! क्षणभर रूककर फिर बोला - घर के काम के अलावा एक काम और करना पड़ेगा!

“कौनसा काम?” जरा तेश में आकर लाजो बोली!

“हमारा बिस्तर गर्म करना पड़ेगा!” उस युवक ने जब यह कहा तब जोर से चिल्लाकर लाजो बोली- क्या कहा? यही कहने के लिए मुझसे दोस्ती बढ़ा रहे थे!

“चलो 20,000 रूपये दूंगा..........हाँ करलो!” युवक ने जोर देकर कहा!

“ए मिस्टर 20,000 क्या तुम बीस लाख भी दोगे तब भी नहीं करूँगी!” एक जोरदार थप्पड़ उसके गाल पर जड़ती हुई लाजो बोली! फिर उसी गुस्से से बोली- तुम्हें अपने पैसो पर बहुत घंमड है न मगर हम झुग्गी झोपड़ी वाले लोग है! गरीब है, असहाय है, मेहनत मजूरी करके कमाते है! मगर इज्जत से रहते है! संगीता मेम के यहाँ के दो हजार रूपये भी मेरे लिए अमृत के समान है! कान खोलकर सुन ले किसी असहाय लड़की की इज्जत से खेलने की कोशिश करी न............कहकर लाजो चली गई! चलते राहगीर उस युवक के आसपास इकट्ठे हो गये! एक व्यंग्य से बोला - और बनो मजनू लैला का थप्पड़ खाया कैसा लगा!

“अरे मजनूं को सारा प्रेम का नशा उतर गया होगा! थप्पड़ भी जोरदार पड़ा, जो अभी तक गाल सहला रहा है!” व्यंग्य से दूसरा बोला! तभी उसके मित्र ने उस भीड़ को हटा दिया! फिर बोला- क्या हुआ?

“मित्र तुम जीते मैं हारा” निराश होकर वह युवक बोला!

“क्या कह रहे हो बात मेरे समझ में नहीं आई!”

“जिस लड़की के साथ तुमसे शर्त लगाई! उस लड़की को बिस्तर न बना सका! मुझे थप्पड़ मार कर चली गई और मैं देखता रह गया!”

“मित्र थप्पड़ इस बात का सूचक है कि तुम्हें सबक सिखा गया! हर व्यक्ति को दौलत से नहीं खरीदा जा सकता है! समझे चलो अब!” कहकर मित्र उसे ले गया!

# ग़ज़ल

**विज्ञान व्रत**

मैं जहाँ मौजूद था
क्यों वहीं ग़ायब रहा

वो जो मुझ पर मर – मिटा
क्यों मुझे दुश्मन लगा

ढूँढ़ते थे जो मुझे
आज ख़ुद हैं लापता

दुश्मनों में एक तू
क्यों मुझे अपना लगा

कह न पाया कुछ मुझे
बस मुझे देखा किया

मैं जहाँ पर था नहीं
क्यों वहाँ दिखता रहा

सुन चुके हो चुप्पियाँ
सच बताना क्या सुना

# ग़ज़ल

वो पराया भी रहे तो
और मेरा भी लगे तो

गर सुबह सूरज ढले तो
वक़्त का पहिया थमे तो

ढूँढ़कर ख़ुद को थके तो
ख़ुद मगर ख़ुद में मिले तो

सूर्य कर दे बर्फ़बारी
चाँद सूरज – सा तपे तो

क़र्ज़ जो उस पर नहीं था
वो चुकाने में चुके तो

# अनुपम उपहार

बृजेश कुमार

राधिका और गौरी दोनों बचपन की अच्छी सहेली थी! दोनों में गहरी घनिष्ठता तथा एक दूसरे के प्रति समर्पन का भाव था! राधिका का स्वभाव नम्र तथा सहज था जबकि गौरी का स्वभाव थोड़ा कठोर था! जैसे-जैसे समय गुजरता गया दोनों सहेलियों की शादी हो गई! राधिका का विवाह गरीब घर में हुआ और उसने उस गरीबी को सहज रूप में समझ लिया! वह अपने पति की छोटी सी दुकान के कार्य में भी खुशी रहती थी! उसका दांपत्य जीवन सुखमय व्यतीत हो रहा था! वह अपने सास-ससुर की सेवा करती! कभी सास की तरफ से कुछ कह देने पर भी जवाब ना देती बल्कि हंसकर बात को टाल देती!

इधर गौरी का ससुराल धनाढ्य था लेकिन गौरी और परिवार के बीच रोज खींचातानी होती थी! जिससे गौरी का जीवन दुख से भर गया था! उसने अब निश्चित कर लिया था कि अब यहां नहीं रहेगी तथा वह अब विवाह के बंधनों से मुक्त होना चाहती थी!

कुछ समय पश्चात राधिका का अपने मायके आना हुआ, इधर गौरी भी अपने मायके आई हुई थी! दोनों की आपस में भेंट होने पर बहुत खुशी हुई! दोनों ही अपने-अपने वैवाहिक जीवन की बातों पर चर्चा करने लगी! चर्चा करते हुए गौरी के आंखों से आंसू टपक रहे थे!

राधिका ने गौरी को चुप किया और पूछा कि आपका झगड़ा किस बात पर होता है! तब गोरी ने कहा कि मेरी सांस मुझे बात- बात पर रोका टोकी करती है! जिससे आवेश में आकर, मैं भी उनको प्रत्युत्तर दे देती हूं! जिससे हमारा यह झगड़ा बहुत तेज हो जाता है और अब मैं इस रोज-रोज के झगड़े से दुखी आ चुकी हूं!

राधिका ने गौरी को समझाया और कहां कि बहन आप एक बार वह करें जो मैं कहती हूं! फिर देखना आप और आपका परिवार!

राधिका ने गोरी से कहां बहन आप अपनी सास को प्रत्युत्तर ना दें बल्कि ऐसा माने कि मेरी मां ने ही मुझसे कहा है! और हंस कर बात को टाल जाएं फिर देखना!

जैसेही गौरी अपने ससुराल आती है! वह अपनी सास की रोका टोकी पर कोई जवाब नहीं देती और हंसकर बात को टाल देती!

गौरी की सास, गौरी में यह परिवर्तन देख कर बहुत आश्चर्य करने लगी! जैसे-जैसे धीरे-धीरे दिन गुजरते गये, अब गौरी की सास भी रोका टोकी कम करने लगी! तथा गौरी अपनी सास की कोई भी बात का बुरा ना मानती!

एक समय ऐसा आया कि गौरी और उसके सास एक दूसरे के साथ मां बेटी की तरह रहने लगी! जिससे गौरी का वैवाहिक जीवन भी सुखमय हो गया!

उसनें अपनी सहेली राधिका को बहुत धन्यवाद दिया और कहा कि आपका दिया गया यह अनुपम उपहार नें तो मेरे जीवन की दिशा -दशा दोनों ही बदल दी! नहीं तो मैं कब की अपना वैवाहिक जीवन विच्छेद कर चुकी होती!

# महारानी अवंती बाई

**जननी** जन्मभूमिश्च की सच्ची सेवा करने वाली वीर वीरांगना, जिन्होंने सन 1857 की क्रांति में अग्रणी भूमिका निभाई किन्तु उनका बलिदान काल के गर्भ में समा गया है ! ये वो समय था ज़ब महिलाओं क़ो राजनीति से परे रखा जाता था, ऐसे समय में अंग्रेजो से लोहा लेने वाली रानी अवन्ति बाई के बारे में आज कुछ जानते हैं :-

रानी अवंती बाई रामगढ़ रियासत की रानी थी ! उस समय का रामगढ़ वर्तमान मध्यप्रदेश के मंडला डिंडोरी और उसके आसपास के क्षेत्र में फैला हुआ था ! अंग्रेजों से लड़ते-लड़ते 20 मार्च 1858 को शहीद हुई रानी अवंती बाई भारत की महान वीरांगना थी उन्होंने अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों को न्योछावर कर दिया !

रानी लक्ष्मीबाई का स्थान जिस प्रकार सुनहरे अक्षरों में इतिहास की वीरांगनाओं के रूप में लिया जाता है उसी प्रकार का स्थान रानी अवंती बाई का भी है रानी अवंती बाई का जन्म ग्राम मनकेहणी जिला सिवनी 187 गावों के जमीदार के घर 16 अगस्त 1831 क़ो, हुआ उनका नाम राव जुझार सिंह लोधी था ! उनकी माता का नाम हरि कँवर था ! रानी अवन्ति का बचपन का नाम मोहिनी था ! कम उम्र से ही वे स्वतंत्रता से जीवन जीना पसंद करती थी !

अवन्ति बाई की सम्पूर्ण शिक्षा घर पर ही हुई ! घर पर ही उन्होंने तलवारबाज़ी का प्रशिक्षण लिया ! कम आयु में वे युद्ध कौशल में पूरी तरह दक्ष हो गई ! उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षण लिया जैसे तीरअंदाजी, घुड़सवारी आदि ! यहाँ तक कि उन्होंने सैन्य रणनीति से राज कार्यों में भी निपुणता प्राप्त की !

अवंती बाई का विवाह रामगढ़ रियासत के राजा लक्ष्मण सिंह लोधी के बेटे राजकुमार विक्रमादित्य लोधी के साथ किया! विक्रमादित्य प्रारंभ से ही वीतराग की प्रवृत्ति के थे वे अधिकांशतः पूजा-पाठ और धार्मिक अनुष्ठानों में लगे रहते थे अगर प्रशासन के अधिकांश कार्य रानी अवंती बाई ही किया करती थी अवंती बाई के 2 पुत्र थे अमन सिंह और शेर सिंह

विक्रमादित्य का निधन 1855 में अचानक से हो जाने के कारण राज्य की पूरी जिम्मेदारी रानी अवंती बाई पर आ गई ! अपने नाबालिग पुत्रों की संरक्षिका के रूप में रानी ने राज्य कार्यों क़ो संभाला ! उन्होंने अंग्रेजों के निर्देशों क़ो न मानने का आदेश दिया इस सुधार कार्य से रानी की लोकप्रियता बढ़ गई !

अंग्रेजों ने तब तक भारत के अनेक भागों में अपने पैर जमा लिए थे जिनको उखाड़ने के लिए रानी अवंतीबाई ने क्रांति की शुरुआत की और भारत में पहली महिला क्रांतिकारी रामगढ़ की रानी अवंतीबाई ने अंग्रेजों के विरुद्ध ऐतिहासिक निर्णायक युद्ध किया जो भारत की आजादी में बहुत बड़ा योगदान है

### रामगढ पर कोर्ट ऑफ वार्ड्स की कार्यवाही:-

अंग्रेजों ने रामगढ राज्य पर "कोर्ट ऑफ़ वार्ड्स" की कार्यवाही की एवं राज्य के प्रशासन के लिए सरबराहकार नियुक्त कर शेख मोहम्मद और मोहम्मद अब्दुल्ला को रामगढ़ भेजा | जिससे रामगढ राज्य "कोर्ट ऑफ़ वार्ड्स" के अधीन चला गया |अंग्रेजों कि इस हड़प नीति को रानी जानती थी अतः उन्होंने दोनों सरबराहकारों को रामगढ़ से बाहर निकाल दिया |

### रानी अवंति बाई और ग्राम खैरी)मंडला (की लड़ाई -

इस समय तक मंडला नगर को छोड़कर पूरा जिला अंग्रेजों से मुक्त हो चुका था | 23 नवम्बर 1857 को मंडला के पास ग्राम खैरी के में अंग्रेजों और रानी अवन्तीबाई के बीच युद्ध हुआ जिसमें शाहपुरा और मुकास के जमीदारों ने रानी का सांथ दिया | इस युद्ध में मंडला का अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर वाडिंग्टन पूरी शक्ति लगाने के बाद भी कुछ ना कर सका और मंडला छोड़ सिवनी भाग गया इस प्रकार पूरा मंडला और रामगढ़ स्वतंत्र हो गया | इस प्रकार पूरा मंडला जिला और रामगढ़ राज्य स्वतंत्र हो गया |

### अंग्रेजों का रानी अवंतिबाई के किले रामगढ़ पर हमला -

अंग्रेज अपनी हार से बौखलाए हुये थे और अपनी हार का बदला लेना चाहते थे | अंग्रेज लगातार अपनी शक्ति सहेजते रहे अंग्रेजों ने 15जनवरी 1858 को घुघरी पर नियंत्रण कर लिया और मार्च 1858 के दूसरे सप्ताह में रीवा नरेश की सहायता से रामगढ को घेर लिया और रामगढ़ पर हमला बोल दिया | वीरांगना रानी अवन्तीबाई की सेना जो अंग्रेजों की सेना की तुलना में बहुत छोटी थी फिर भी साहस पूर्वक अंग्रेजों का सामना किया | रानी ने परिस्थितियों को भांपते हुये अपने किले से निकलकर डिंडोरी के पास देवहारगढ़ की पहडियों की ओर प्रस्थान किया |

### रानी अवन्ती बाई का बलिदान स्थल बालपुर |

डिन्डोरी जिले के शाहपुर कस्बे के नजदीक ग्राम बालपुर में वीरांगना रानी अवन्तीबाई ने लड़ते-लड़ते अपने सीने में खंजर उतारा था | इस स्थान को बलिदान स्थल के रूप में सुरक्षित किया गया है | यंहा प्रतिवर्ष रानी अवन्ती बाई का बलिदान दिवस मनाया जाता है | बालपुर से रानी के सैनिक घायल अवस्था में रानी अवन्ती बाई को रामगढ़ ले जा रहे थे तभी सूखी तलैया नामक स्थान पर रानी का स्वर्गवास हो गया | सूखी तलैया नामक स्थान बालपुर और रामगढ के बीच पड़ता है |

### रानी अवन्ती बाई की समाधि

रानी अवन्ती बाई के वीरगति को प्राप्त हो जाने के बाद उनके पार्थिव शरीर को रामगढ लाया गया |रामगढ में ही रानी अवन्ती बाई की समाधि बनाई गई | रानी अवन्ती बाई की समाधि देखरेख के अभाव में अब बहुत ही जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है|

रामगढ़ पहले मंडला जिले के अंतर्गत आता था परन्तु मंडला जिले से डिंडोरी जिला अलग होने के पश्चात रामगढ डिंडोरी जिले के अंतर्गत आने लगा है | रामगर डिंडोरी से 23 किलोमीटर दूर अमरपुर विकास खंड से 1 किलोमीटर दूर है(

रानी अवन्ती बाई की याद में जबलपुर में पवित्र नर्मदा नदी पर बने बरगी डेम का नाम रानी अवन्ती बाई के नाम पर रखा गया | इसी डेम में रानी अवन्ती बाई का जन्म स्थान ग्राम मनकेहणी डूब क्षेत्र में आ गया है |

देश के लिये अपने प्राणों क़ो न्योछावर कर देने वाली वीरांगना रानी अवन्ती बाई को शत शत नमन् | देश सदैव इनका ऋणी रहेगा | **इसलिए सच ही कहा है नारी अबला नहीं सबला है, यदि वह करने की ठान ले!**

# भटनेर का दुर्ग

- घग्घर नदी के मुहाने पर बसा भटनेर दुर्ग का निर्माण भाटी राजा भूपत ने कराया!
- भटनेर का दुर्ग राजस्थान राज्य के उत्तरी प्रवेश द्वार का रक्षक कहा जाता है क्योंकि मध्य एशिया से होने वाले आक्रमण इसी मार्ग से होते थे!
- महमूद गजनबी ने 1001 ई. में भटनेर के दुर्ग पर अपना अधिकार कर लिया!
- 1398 ई. में भटनेर के दुर्ग पर तैमूर ने आक्रमण कर दिया! जिससे भाटी राजा दुलीचंद को परास्त कर दुर्ग अपने कब्जे में ले लिया!
- तैमूर के भयानक आक्रमण से भयभीत होकर हिंदू स्त्रियों के साथ-साथ मुसलमान स्त्रियों ने भी जौहर किया!
- बीकानेर के चौथे शासक राव जैत सिंह ने 1527 ई. में सादा चायल को पराजित कर पहली बार भटनेर के दुर्ग पर राठौड़ों का आधिपत्य हुआ!
- सन 1534 ई. में हुमायूं के भाई कामरान ने भटनेर के दुर्ग पर पुन: अधिकार कर लिया!
- बीकानेर के महाराजा सूरत सिंह ने 1805 ई. में भटनेर के दुर्ग को वापस लेने के लिए आक्रमण कर दिया! इससे 5 महीने तक राठौड़ों के जाब्ते ने दुर्ग को घेरे रखा और इस प्राचीन दुर्ग पर राठौर ने पुन: विजय प्राप्त कर ली!
- महाराजा सूरत सिंह द्वारा मंगलवार के दिन भटनेर के दुर्ग पर अपना अधिकार होने के कारण इसका नाम हनुमानगढ़ रख दिया गया!
- और इस उपलक्ष में किले के अंदर हनुमान जी के मंदिर का निर्माण भी कराया गया!

## दर्शनीय स्थल:-

सिला माता का मंदिर :- इस मंदिर की विशेषता यह है कि यहां पर सभी धर्मों के लोग चाहे हिंदू-मुस्लिम या सिख पूजा करते हैं! इसे मुस्लिम सिला पीर भी कहते हैं!

**भद्रकाली मंदिर** :- यह मंदिर हनुमानगढ़ से 7 किलोमीटर दूर घग्घर नदी के किनारे स्थित है!

**गोगामेडी** :- यह फिरोज शाह द्वारा निर्मित मस्जिद नुमा मंदिर है! यह लोक देवता गोगाजी का तीर्थ स्थल है! जिन्हें सांपों का देवता भी कहते हैं!

**कालीबंगा** :- ( काली चूड़ियां ) हड़प्पा कालीन सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए है!

**संगरिया** :- स्वामी केशवानंद जी के स्मारक संग्रहालय स्थित है!

## अन्य महत्वपूर्ण बिंदु :-

- भटनेर दुर्ग के संबंध में तैमूर लंग के तुजुक-ए- तैमूरी मे लिखा है कि "सामरिक दृष्टि से इतना मजबूत और सुरक्षित किला मैंने भारत में कहीं नहीं देखा?"
- पुरातात्विक स्थल रंग महल हनुमानगढ़ स्थित है!
- हनुमानगढ़ जिले में सूर्य की किरणें अधिकतम तिरछी पडती हैं!
- भटनेर का किला एक धान्वन दुर्ग है!

## आरजेएस परीक्षा 2022 में चयनित विद्यार्थी

# साक्षात्कार

**महावीर** जी आपका अभिनंदन और स्वागत है! आपने अपनी सफलता से अपने परिवार जनों को गौरवान्वित किया है! हमें आपसे बात करके आज अत्यंत हर्ष महसूस हो रहा है! आपको नई गूंज के समस्त परिवार एवं संपादक मंडल की ओर से हार्दिक बधाई!

1. **महावीर जी आप अपना जीवन परिचय शिक्षा एवं परिवार के बारे में बताएँ**

उत्तर :- मेरा नाम महावीर सैनी है एवं उम्र 24 साल है मैंने अपनी 10+2 रजनी पब्लिक सीनियर सेकेंडरी स्कूल चौमूं से की है उसके पश्चात मैंने राजस्थान विश्वविद्यालय से संबद्ध विद्यास्थली लॉ कॉलेज से वर्ष 2020 में BA LLB की एवं वर्ष 2022 में राजस्थान विश्वविद्यालय से LLM की पढ़ाई की है मैंने वर्ष 2021 में UGC NET JRF की परीक्षा भी

पास की वर्ष 2022 में राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा मुझे B L L B में टॉप करने के लिए स्वर्ण पदक भी प्रदान किया एवं वर्ष 2017-2019 तक मैं राजस्थान विधिक सेवा प्राधिकरण मे लीगल अवेयरनेस कमेटी का सदस्य भी रहा।

RJS परीक्षा में मेरा सलेक्शन प्रथम प्रयास में ही हुआ है

मेरे परिवार में दादी ,माता-पिता व भाई बहन है ।मेरे पिताजी अभियोजन अधिकारी ,वह माता गृहणी है।

### 2. आपके प्रेरणा स्त्रोत जिन्हें आप अपनी सफलता का श्रेय देना चाहेंगे।

उत्तर :- मैं अपनी सफलता का प्रथम श्रेय ईश्वर तथा मेरे स्वर्गीय दादाजी एवं मेरे परिवार ,गुरुजनों व मित्रों को देना चाहता हूँ । RJS की तैयारी के दौरान मुझे मेरे परिवार एवं मित्रों ने हौसला दिया एवं मुश्किल समय में मेरे साथ रहे हैं । पिताजी ने इस ने तैयारी में मैं मेरी अत्यधिक मदद की , मेरे प्रेरणास्रोत मेरे पिताजी हैं उन्हीं के संघर्ष वह समर्पण को देखकर मैंने न्यायिक सेवा में आने का मन बनाया है।

### 3. महावीर जी आपकी सफलता के मूल मंत्र क्या है जो आप स्टूडेंट्स को बताना चाहेंगे ।

उत्तर :- मेरे अनुसार किसी भी परीक्षा में सफल होने के लिए 5 चीज़ों का होना आवश्यक हैं वे हैं दृढ़निश्चय ,मेहनत ,आत्मविश्वास ,consistency और प्रैक्टिस ।

सफल होने के लिए अपने गोल के प्रति दृढ़ निश्चय व समर्पित होना आवश्यक है एवं उसे प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास करना उससे भी अधिक आवश्यक है साथ में स्मार्ट वर्क भी करें जहाँ ज़रूरत हो वहाँ टेक्नोलॉजी का यूज़ करें चीज़ों को संक्षिप्त करने की आदत डालें । मेहनत के दम पर इंटेलीजेंसी को भी हराया जा सकता है इसलिए इसलिए सही दिशा में प्रयास करते रहना चाहिए। परीक्षा भी एक युद्ध के समान है जो बिना आत्मविश्वास वह प्रयास की नहीं लड़ी जा सकती है practice से हम किस स्तर पर हैं एवं हमारी कमज़ोरी पता चलती रहती है

। इसी के साथ अंत तक हार नहीं मानने की प्रवृत्ति भी एक अभ्यर्थी में होना अत्यंत आवश्यक है।

4. **आप अगर Pre और Mains की तैयारी के लिए कुछ विशेष बताना चाहे?**

उत्तर :- RJS परीक्षा तीन चरणों में होती है Prelims , मेन्स और इंटरव्यू एवं तीनों का पैटर्न भी अलग-अलग है लेकिन तैयारी के लिए तीनों मे इंटिग्रेटेड अप्रोच होना चाहिए Date डिक्लेयर होने के बाद Bare act पर ज़्यादा फ़ोकस रखें जितना हो सके उतना revision पर ध्यान दे Previous year के प्रश्नों को सॉल्व ज़रूर करें बारीकी से Bare act के प्रावधानों को पढ़ें एवं कॉन्सेप्ट्स क्लियर रखें

इसके साथ ही टाइम मैनेजमेंट का ज़रूर ध्यान रखें प्रतिदिन में हर सब्जेक्ट को थोड़ा थोड़ा टाइम ज़रूर दें और महत्वपूर्ण चीज़ों के नोट्स बनाएँ पहले से । रिवीज़न करते हैं व मैन्स के लिए उत्तर लेखन प्रैक्टिस ज़रूर करें ताकि मुख्य परीक्षा के दिन आपको Difficulty Face नहीं करनी पड़े|

5. **RJS बनने के बाद क्या कुछ ऐसे बदलाव आप समाज में लाने के प्रयास आप करना चाहेंगें यदि हां तो वो क्या हैं**

उत्तर :- RJS ज्वाइन करते ही मेरी प्राथमिकता रहेगी की में माननीय न्यायपालिका के निर्देशों का पालन बेहतर तरीक़े से कर सकूं और साथ ही समाज के निम्न , वंचित व पिछड़े वर्ग के लोगों को सरलता ,शीघ्रता व सुलभता से न्याय प्राप्त हो सके । मेरा यह भी प्रयास रहेगा की निर्णय के साथ साथ न्याय भी हो एवं सही समय पर डिस्पोज़ल का प्रयास करूँगा|

6. **कुछ important books suggest करना चाहेंगे ?**

उत्तर :- अधिकतम फ़ोकस Bare acts पर रखें और उनका बार बार रिवीज़न करते हैं लेकिन Bare act के साथ साथ बुक्स भी पढ़े ताकि कंसेप्ट क्लियर करने में आसानी हो चुनिंदा टॉपिक्स के नोट्स ज़रूर बनाएँ पहले से Sources लिमिटेड लेकिन रखें|

बुक्स की बात करें तो मैंने IPC ,CRPC एवं Evidence के लिए डीयू प्रोफ़ेसर कृष्णमूर्ति की बुक रेफ़र की और Constitution लिए JN पांडे , CPC के लिए Takwani Contract के लिए वाइ.एस .शर्मा और Latest and landmark judgments के लिए परीक्षा मंथन पड़ी थी|

**7. आपका मुख्य सन्देश सभी ववद्यार्थियों के लिए जो तैयारी में लगे हैं !**

उत्तर :- कॉम्पिटिशन एग्ज़ाम की तैयारी कर रहे विद्यार्थीगणों से मे यही कहना चाहूंगा कि आप स्वयं पर विश्वास रखें क्योंकि एग्जाम्स भी एक युद्ध की तरह होते हैं जो बिना आत्मविश्वास के नहीं जीते जा सकते एवं टेम्परेरी असफलताओं से हताश न हों निरंतर मेहनत करते रहिए क्योंकि मेहनत के आगे इंटेलीजेंसी भी घुटने टेक देती है । हमेशा अपना एटीट्यूड पॉज़िटिव रखें और याद रखें कि आपकी परिस्थितियाँ ही आपके लिए सबसे बड़ा मोटिवेशन है। बाहरी मोटिवेशन की कोई आवश्यकता नहीं होती। ज़्यादा स्ट्रेस न लें क्योंकि उससे नुक़सान ही होता है बस चुपचाप अपनी तैयारी करते रहें आपको सफलता ज़रूर मिलेगी।

**8 . आपके जीवन का सबसे अधिक यादगार समय !**

उत्तर :- फ़िलहाल तो मेरे लिए जिस दिन RJS का परिणाम आया था वह सबसे यादगार रहा है जिस तरह से ख़ुशी का माहौल आदर, सत्कार मिला वैसा पहले कभी नहीं हुआ । मेरे परिवारजनों, मित्रों और गुरुजनों को प्रश्न प्रसन्न देखकर मैं भी अत्यधिक प्रसन्न हूँ।

**9.आपके जीवन की सबसे बड़ी चुनौती क्या रही ?**

उत्तर :- मेरे लिए जीवन का सबसे चुनौतीपूर्ण समय BALLB में एडमिशन के बाद का रहा क्योंकि पहला तो मैं हिंदी बैकग्राउंड से था और दूसरा 10+2 साइंस मैथ थी जो कि लॉ फील्ड से बिलकुल अलग है इसलिए मुझे 1 -2 दो वर्ष तो नए वातावरण में एडजस्ट होने में ही लग गए । उसके बाद RJS की तेयारी का समय भी चुनौतीपूर्ण रहा क्योंकि इस एक्जाम के तीन चरणों में होने की वजह से अवधि लंबी है और उस दौरान ख़ुद पर प्रश्नचिन्ह एवं डिमोटिवेशन होना लाज़मी है लेकिन अगर सफल होना है तो ख़ुद पर विश्वास रखते हुए अपने लक्ष्य पर केंद्रित रहे एवं आपको सोते उठते केवल आपका लक्ष्य ही याद रहना चाहिए।

**10.आप युवा वर्ग में कौनसे बदलाव अपेशक्षत मानते हैं ? क्या आपको लगता है आज के युवा सफलता एवं नैवतकता के मानदंडो पर खरे उतरते हैं ?**

उत्तर :- मुझे लगता है कि आज के समय में धैर्य सबसे आवश्यक है जो की आज की युवा पीढ़ी में बहुत कम देखने को मिलता है इसलिए नई युवा पीढ़ी को धैर्य को ध्यान में रखते हुए ये समझना होगा की कुछ चीज़ों को प्राप्त करने के लिए सही समय का इंतज़ार ज़रूरी है।

दूसरा भीड़चाल एवं दिखावे की मानसिक प्रवृत्ति से बचें ये आपका ध्यान भटकाती है कुछ पाने के लिए कुछ त्याग तो करना ही पड़ता है और लीक से हटकर कार्य करने की प्रवृति रखें तो सफल जल्दी होंगे । माता पिता व गुरुजनों का विशेष तौर से सम्मान करे है और सबसे विनम्रता से ही व्यवहार करें । आपकी विनम्रता आपको एक दिन नई ऊंचाइयों पर ले जाएगी

कुछ स्थितियों को छोड़ दें तो निस्संदेह आज भी युवा पीढ़ी सफलता वह नैतिकता के मानदंडों पर खरी उतर रही है बस अपने संस्कार व संस्कृति से जुड़े रहे।

# दिसम्बर अंक 2022 के लेखक परिचय


- गिरेंद्र सिंह भदौरिया

  prankavi@gmail.com

  9424044284

  6265196070

  पता :- वृत्तायन 957 स्कीम नंबर 51

  इंदौर मध्य प्रदेश पिन :-452006

- डॉ घनश्याम बादल

  215, पुष्परचना, गोविंद नगर

  रुड़की

  9412903681

  Ghansyambadal54@gmail.com

- बृजेश कुमार

  Aryabrijeshsahu24@gmail.com

  9785837924

  पता - जुरेहरा भरतपुर राज.

  321023

- विज्ञान व्रत

  एन -138, सेक्टर -25

  नोएडा - 201301

  9810224571

Vigyanvrat@gmail.com

- विनोद मानवी
  महल चौक, जुरेहरा भरतपुर राज.
  पिन कोड -321023
  9982740832

- डा अदिति भारद्वाज
  Flat no-3, plot 15
  सत्यम नियर H-block
  सिद्धार्थनगर जयपुर राज.
  8233567797
  Email:- Bharadwaj.aditi5@gmail.com

- गोवर्धनदास बिन्नानी 'राजा बाबू'
  जय नारायण व्यास कॉलोनी, बीकानेर
  मोबाइल नंबर- 7976870397 / 9829129011
  gd-binani@yahoo.com

- डॉ शिवा धमेजा
  9351904104
  Drshivadhameja01@gmail.Com
  पता :- 140A गायत्री नगर जयपुर

- रमेश मनोहरा

  शीतला माता गली,

  जावरा जिला रतलाम

  मध्य प्रदेश 457226

  मो न.- 9479662215

  Manoharramesh192@gmail.com

Goonj nayi @gmail.com

## शोध, साहित्य एवं संस्कृति की उत्कृष्ट पत्रिका

# नई गूँज

DESIGN BY RAHUL DEEWAN

Sign up at www.nayigoonj.com
9785837924